INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

बावरी समाज की संस्कृति व लोक परंपरा का बदलता स्वरूप

श्रीराम पंवार, शोधार्थी, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. संजू, शोध निर्देशक, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

शोध सारांश

यह शोध बावरी समाज की पारंपरिक संस्कृति और लोक परंपराओं के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करता है। बावरी समाज, जो भारत में एक जनजातीय समुदाय के रूप में जाना जाता है, अपने विशिष्ट लोकाचार, रीति–रिवाज, लोक संगीत, नृत्य, पारंपरिक जीवनशैली और धार्मिक आस्थाओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। किंतु वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, संचार साधनों की पहुँच, और सरकारी विकास योजनाओं ने इस समाज की पारंपरिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत यह पाया गया कि बावरी समाज अब धीरे–धीरे मुख्यधारा की जीवनशैली को अपनाता जा रहा है, जिससे पारंपरिक लोक कलाएँ, रीति–रिवाज और सांस्कृतिक पहचान क्षीण हो रही है। वहीं दूसरी ओर, इस परिवर्तन ने समाज को सामाजिक–आर्थिक रूप से सशक्त भी किया है। शोध के अनुसार यह परिवर्तन संघर्ष और समायोजन की प्रक्रिया है, जहाँ एक ओर पारंपरिक मूल्य टूट रहे हैं, वहीं दूसरी ओर नई सामाजिक चेतना और आत्मविश्वास का विकास हो रहा है।

परिचय

बावरी समाज, राजस्थान सहित भारत के कई राज्यों में निवास करने वाला एक आदिवासी समुदाय है, जिसे ऐतिहासिक रूप से वनों और पहाड़ों में जीवनयापन करते हुए देखा गया है। यह समाज प्राचीन परंपराओं, लोकगाथाओं, नृत्य, संगीत और सांस्कृतिक विशेषताओं से समृद्ध है। इस शोध का उद्देश्य बावरी समाज की संस्कृति, जीवनशैली, सामाजिक ढांचा एवं उनकी परंपराओं का अध्ययन करना है। बावरी समाज की संस्कृति एक समृद्ध लोकधरोहर है जो उनकी पारंपरिक जीवनशैली, धार्मिक विश्वास, सामाजिक संरचना और कला–संस्कृति में परिलक्षित होती है। बावरी समाज की संस्कृति के प्रमुख पहलुओं का वर्णन प्रकार से है।

महत्व

यह एक विश्लेषणात्मक प्रश्न है जिसमें आपको यह बताना है कि बावरी समाज की पारंपरिक संस्कृति और लोक परंपराओं में जो बदलाव आए हैं, उनका समाज और उसकी पहचान पर क्या प्रभाव पड़ा है और इन बदलावों का महत्व क्या है। बावरी समाज भारत के उन जनजातीय समुदायों में से एक है जिसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, रीति–रिवाज और लोक परंपराएँ रही हैं। समय के साथ–साथ वैश्वीकरण, शिक्षा, शहरीकरण और तकनीकी विकास ने इस समाज की पारंपरिक संरचना और जीवनशैली को प्रभावित किया है। इन बदलावों ने उनकी सांस्कृतिक पहचान को नया रूप दिया है, जिसे समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साहित्य पुर्नवलोकन–

- **बावरिया अजय (2018)** बावरी जाति का इतिहास में बताया कि जनजातियों की जोकि संस्कृति व लोक साहित्य का तीव्र गति से ह्रास हो रहा है, इसे लेखबद्व करने तथा आधुनिक श्रव्य–दृश्य उपकरणो द्वारा सुरक्षित करने की महती आवश्यकता है, बावरी समुदाय सभी परिमापों से एक वीर जनजाति कहलाने का अधिकारी हैं। बावरी समुदाय सम्पूर्ण भारत में निवास करता है, जो कि अलग–अलग प्रदेशों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है।
- **बावरीया अजय (2018)** बावरी जाति का इतिहास में बताया की बावरी जाति भारत की एक पुरानी जनजाती है जो इस समय प्रायः समस्त भारत में बिखरे हुऐ रूप में है। बावरी बावरीया और बाउरी आदि नामो के अतिरिक्त इस समूदाय के कुछ वर्णो को स्वतंत्र नाम से भी जाना जाता है जैसे मोघिया,मोणिया,बधक,बागडी,बागरी आदि।
- **बावरीया अजय (2018)** बावरी जाति का इतिहास पुस्तक में बताया की बावरी समाज अग्रेजी शासक की दमकारी नीतियों व जरायम पेशा ऐक्ट की अमानवीय धाराऔ की चक्की में पिसते रहने के फलस्वरूप शकांलु,संकोचशील परम्परावादी और अन्धविश्वासी होने के साथ साथ सदियो तक गरीबी और अनपढता का अभिशाप झेलते रहे है। अपने जिस उच्चतर बन्धु समाज की रक्षा के लिये लगातार अपने सुख भोग की आहूति देते रहे है।
- **सिंह नामवर (2019)** "संस्कृति और सौन्दर्य" आलेख में बताया की सभ्यता और संस्कृति की जिन दो युरोपीय अवधारणाओ को डॉ पाण्डे ने भारत की संस्कृति के विवेचन के लिए अपनाया उनका सम्बन्ध सभ्यता से है, या संस्कृति से ? आदान–प्रदान यदि सभ्यता के ही क्षेत्र में भी आदान–प्रदान

होता है, फिर भी जिस तरह राष्ट्रीय स्तर पर अनुमोदित और प्रोत्साहित सामासिक संस्कृति का विरोध डॉ पाण्डे ने किया है, उसे किसी अन्य पक्ष की राजनीति की वकालत न मानना अज्ञेय के लिए कठिन होगा।

- **डॉ. सैन कुमार राजेन्द्र (2019)** बागड़ी समाज के रीति रिवाज व विभिन्न रस्में में बताया कि भारत विविध संस्कृतियों का देश है, यंहा की संस्कृतियों का आधार यंहा के भौगोलिक परिस्थितियां है, भारत में पंजाब हरियाणा व राजस्थान की सीमाओं पर एक विशिष्ठ सांस्कृतिक इकाई है , इस इकाई का आधार यंहा की बोली है, जिसे बागड़ी बोली कहा जाता है, बागड़ी बोली मूलतः राजस्थानी हरियाणवी और पंजाबी भाषाओं का मिश्रित रूप है, इसका भौगोलिक विस्तार राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर तथा चुरू के कुछ इलाकों तक हैं।
- **कुमारी मोनिका (2019)** राही मासूम रजा के "आधा गांव" उपन्यास में दलित विमर्श में बताया कि दलित विमर्श के क्रम में हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द से लेकर औमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सुरजपाल चौहान सभी का मुल्याकन होता रहा है, और उनके अवदानों की चर्चा होती रही है किन्तु कुछ ऐसे भी साहित्यकार रहे है जिन्होने दलित आन्दोलन के दो दशक पूर्व ही दलितों कि दीन–हीन दशा को उसकी गहराई में जाकर झांकने का प्रयास किया।

1. पारंपरिक संस्कृति का स्वरूप

पहनावा पारंपरिक रूप से बावरी समाज रंग–बिरंगे वस्त्र पहनता था, जिनमें लोक शिल्प की झलक होती थी। भाषा व बोली स्थानीय बोलियाँ जैसे राजस्थानी या मारवाड़ी बोलने की परंपरा रही है। नृत्य–संगीत लोक नृत्य और वाद्य यंत्रों का विशेष स्थान रहा है। जीवनशैली एक कृषक व श्रमिक समाज के रूप में इनका जीवन जंगलों और खेतों से जुड़ा रहा है।

2. बदलता स्वरूप

शिक्षा व रोजगार अब नई पीढ़ी शिक्षा की ओर उन्मुख हो रही है। सरकारी योजनाओं और आरक्षण के माध्यम से नौकरी व उच्च शिक्षा में भागीदारी बढ़ी है। आवास व जीवनशैली कच्चे मकानों के स्थान पर पक्के मकान बन रहे हैं। खानपान, रहन–सहन में आधुनिकता आई है। लोक परंपराएँ पारंपरिक लोकगीत, नृत्य, और त्योहार अब कुछ हद तक कम हो गए हैं या नए रूप में मनाए जा रहे हैं। धार्मिक विश्वास पारंपरिक देवताओं के पूजन के स्थान पर मुख्यधारा के धर्मों का प्रभाव बढ़ा है।

3. इस बदलते स्वरूप का महत्व

सकारात्मक प्रभाव

- सशक्तिकरण शिक्षा और रोजगार से आत्मनिर्भरता आई है।
- सामाजिक सम्मानरू समाज की मुख्यधारा में सहभागिता बढ़ी है।
- स्वास्थ्य और जीवन गुणवत्ता में सुधार।

चुनौतियाँ

- सांस्कृतिक पहचान का क्षरण परंपरागत गीत, नृत्य, लोककथाएँ विलुप्त हो रही हैं।
- पीढ़ियों के बीच अंतर नई पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच सांस्कृतिक समझ की दूरी।
- आधुनिकता बनाम परंपरा का संघर्ष।

बावरी समाज की संस्कृति

1. जीवनशैली और रहन–सहन

बावरी समाज परंपरागत रूप से एक घुमंतू या अर्ध–घुमंतू जीवनशैली अपनाता रहा है। इनका जीवन जंगलों, खेतों और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रहा है। वर्तमान में ये समाज अर्धशहरी क्षेत्रों और गांवों में बस चुका है, किंतु इनकी पारंपरिक संस्कृति आज भी जीवित है।

2. धार्मिक विश्वास

बावरी समाज के धार्मिक विश्वास लोक–आस्थाओं से गहराई से जुड़े होते हैं। वे विशेष रूप से भैरव, तेजाजी, गोगाजी, काला बाबा, और मालदेव जैसे लोकदेवताओं की पूजा करते हैं।

- तांत्रिक परंपराएं, झाड़–फूंक और ओझा–गुणी परंपरा समाज में प्रचलित है।
- देवी–देवताओं के थान (स्थानीय मंदिर या स्थान) पर सामूहिक पूजा होती है।

3. लोकगीत और संगीत

बावरी समाज के लोकगीत उनके सामाजिक अनुभवों, ऐतिहासिक संघर्षों, प्रेम, प्रकृति और धार्मिक आस्था पर आधारित होते हैं।

- ढोलक, मांदल, और थाली जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

- महिलाएं अक्सर समूहों में पारंपरिक गीत गाती हैं, जैसे विवाह गीत, सोहर (जन्मगीत), और त्योहारों के गीत।

4. नृत्य और उत्सव

- त्योहारों पर सामूहिक नृत्य किया जाता है।
- गवर और गोगा नवमी जैसे अवसरों पर महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में नाचती हैं।
- भैरव नृत्य और तेजाजी की कथा का मंचन खासकर राजस्थान क्षेत्र में देखने को मिलता है।

5. वेशभूषा और आभूषण

- पुरुष पारंपरिक धोती, अंगरखा और पगड़ी पहनते हैं।
- महिलाएं घाघरा, कांचली और ओढ़नी पहनती हैं। वे भारी चांदी के गहने पहनती हैं, जैसे नथ, बिछुए, कड़े और कंठी।

6. पारंपरिक ज्ञान और चिकित्सा

- बावरी समाज में पारंपरिक जड़ी–बूटी और देसी इलाज का ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी चला आ रहा है।
- ये लोग प्राकृतिक संसाधनों से औषधियाँ बनाकर बीमारियों का इलाज करते हैं।

7. सामाजिक परंपराएं

- विवाह बाल विवाह की परंपरा पहले प्रचलित थी, लेकिन अब इसमें कमी आई है। विवाह आमतौर पर समाज के भीतर ही होता है।
- जातीय पंचायतें किसी भी सामाजिक या पारिवारिक विवाद का निपटारा परंपरागत पंचायतें करती हैं।
- त्योहारः दीपावली, होली, गणगौर, गोगा नवमी, और स्थानीय देवताओं के मेले प्रमुख पर्व हैं।

बावरी समाज की लोक परंपरा उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से चली आ रही है। ये परंपराएं उनकी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती हैं और उनके सामाजिक ढांचे, धार्मिक विश्वासों, कला, नृत्य, संगीत, और जीवनशैली को आकार देती हैं।

बावरी समाज की लोक परंपराएं

1. धार्मिक लोक परंपराएं

देवता पूजा बावरी समाज के लोग गोगाजी, तेजाजी, भैरव बाबा, मालदेव, काला बाबा जैसे लोकदेवताओं की पूजा करते हैं। स्थान पूजा गांवों में "थान" (देव स्थान) होते हैं जहाँ विशेष अवसरों पर सामूहिक पूजा की जाती है। बलि प्रथा कुछ क्षेत्रों में पशु बलि की परंपरा भी रही है, विशेषकर भैरव या काली पूजा में।

2. तीज–त्योहारों की परंपराएं

गवर पूजा विवाहित महिलाएं यह व्रत करती हैं, शिव–पार्वती की पूजा करती हैं और सामूहिक लोकगीत गाती हैं। गोगा नवमी गोगाजी की स्मृति में यह पर्व मनाया जाता है। लोग साँप से रक्षा की कामना करते हैं। होली व दीपावली रंगों और रोशनी का उत्सव विशेष उत्साह से मनाया जाता है, जिनमें लोकनृत्य और गीत प्रमुख हैं। भैरव अष्टमी भैरव बाबा की विशेष पूजा होती है, और पूरी रात जागरण किया जाता है।

3. गीत–संगीत की परंपरा

लोकगीत जीवन के हर अवसर जन्म, विवाह, फसल कटाई, व्रत के लिए अलग–अलग गीत होते हैं।

- सोहर (जन्म पर गाया जाने वाला)
- बन्ना–बन्नी गीत (शादी के समय)
- गवर गीत (गणगौर के समय)
- वाद्य यंत्र ढोलक, थाली, मांदल, और एकतारा प्रमुख हैं।

4. लोकनृत्य और नाट्य परंपरा

त्योहारों, विवाह, और देवी पूजन के अवसरों पर महिलाएं एवं पुरुष पारंपरिक नृत्य करते हैं। तेजाजी की कथा या गोगाजी की लीला का लोक–नाट्य रूप में मंचन किया जाता है। कई बार डोंगरों (पहाड़ियों) पर सामूहिक नृत्य किया जाता है, जो कृषि कार्यों के समापन का प्रतीक होता है।

5. सामाजिक लोक परंपराएं

पंच परंपरा विवादों का निपटारा पंचों द्वारा बिना अदालत के किया जाता है। सामूहिक विवाह सामाजिक स्तर पर एक साथ कई विवाह करने की परंपरा भी रही है, जिससे खर्च कम होता है।

लोकविश्वास अंधविश्वास, झाड़–फूंक, नजर उतारना आदि परंपराएं प्रचलित हैं, जिन्हें गुणी या ओझा द्वारा किया जाता है।

6. पारंपरिक ज्ञान व हस्तशिल्प

बावरी समाज में हर्बल उपचार और देसी औषधियों का पारंपरिक ज्ञान विद्यमान है। मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के औजार और वस्त्र पर हस्तकला भी एक परंपरा रही है।

7. मृत्यु और पितृ परंपराएं

मृत्यु के बाद विशेष संस्कार होते हैं जैसे तेरहवीं, पिंडदान और पितृ पूजन। समाज में पूर्वजों की आत्मा को शांत करने के लिए वार्षिक पूजा का आयोजन होता है।

बावरी समाज की संस्कृति व लोक परंपरा का बदलता स्वरूप

बावरी समाज की संस्कृति और लोक परंपराएं भारत की लोक–जीवन की विविधता में एक अनूठा स्थान रखती हैं। परंपरागत रूप से यह समाज प्रकृति आधारित, श्रमशील और सामूहिक जीवन शैली को अपनाता रहा है। किंतु आधुनिकता, शहरीकरण, शिक्षा और संचार माध्यमों के प्रभाव से इन परंपराओं में धीरे–धीरे परिवर्तन आ रहा है।

1 पारंपरिक सांस्कृतिक व लोक परंपराओं की झलक

- भैरव, तेजाजी, गोगाजी जैसे लोकदेवताओं की पूजा।
- ढोलक, मांदल, थाली पर आधारित लोकगीत और सामूहिक नृत्य।
- पारंपरिक वेशभूषा दृ महिलाओं में घाघरा–ओढ़नी, पुरुषों में धोती–कुर्ता।
- पंचपरंपरा (जातीय पंचायत) और झाड़–फूंक आधारित चिकित्सा।
- सामूहिक त्योहार, मेलों में भागीदारी और थान पूजा।

2. परिवर्तन के कारक

(क) शिक्षा का प्रभाव

बावरी समाज के युवाओं में अब शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है। इससे पारंपरिक मान्यताओं और अंधविश्वासों पर प्रश्नचिन्ह लगे हैं।

(ख) शहरीकरण और पलायन

काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन से पारंपरिक जीवनशैली में बदलाव आया है। अब वे आधुनिक वस्त्र, भाषा और रहन–सहन को अपनाने लगे हैं।

(ग) सरकारी योजनाएँ और आरक्षण

शासन द्वारा आदिवासी कल्याण की योजनाएं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार ने समाज में चेतना लाई है, जिससे पुरानी परंपराओं का स्थान धीरे–धीरे नई सोच ने ले लिया है।

(घ) मीडिया और तकनीक का प्रभाव

टीवी, मोबाइल और सोशल मीडिया के माध्यम से नई सांस्कृतिक धाराओं का प्रभाव पड़ा है, जिससे पारंपरिक लोकनृत्य, गीत और पूजा–पद्धति में कमी आई है।

3. संस्कृति व परंपराओं में आए मुख्य परिवर्तन निम्न तालिका से स्पष्ट हैं।

क्षेत्र	पारंपरिक स्वरूप	वर्तमान परिवर्तित स्वरूप
धार्मिक आस्था	लोकदेवताओं की पूजा	अब मुख्यधारा धर्मों की ओर झुकाव (हिंदू देवी–देवताओं, संतों की ओर)
वेशभूषा	पारंपरिक परिधान	शहरी कपड़ों का बढ़ता प्रयोग
लोकनृत्य व गीत	सामूहिक, मौखिक परंपरा	मेबाइल व टीवी पर आधुनिक गीतों की लोकप्रियता
भाषा	स्थानीय बोलियाँ	हिंदी व शहरी भाषाओं का प्रभाव
चिकित्सा पद्धति	ओझा–गुणी, जड़ी–बूटी	एलोपैथिक इलाज और सरकारी अस्पतालों पर निर्भरता

5. सकारात्मक प्रभाव

- शिक्षा का विस्तार बच्चों और युवाओं को शिक्षा मिलने लगी है, जिससे वे आत्मनिर्भर हो रहे हैं।
- महिलाओं की भागीदारीरू महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार आया है।
- स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच झाड़–फूंक की जगह चिकित्सा केंद्रों का उपयोग बढ़ा है।
- सरकारी योजनाओं से लाभ आदिवासी उपभोक्ता योजनाओं और आवास, खाद्यान्न, छात्रवृत्ति से जीवनस्तर बेहतर हुआ है।

6. चुनौतियाँ

- संस्कृति का लोप पारंपरिक गीत, नृत्य, भाषा और कहावतें लुप्त होने की कगार पर हैं।

- पहचान संकट युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट रही है।
- सांस्कृतिक आत्मगौरव की कमी आधुनिकता की होड़ में अपनी विरासत को हीन समझा जाने लगा है।

अनुशंसाएँ

- लोक संस्कृति के दस्तावेजीकरण की आवश्यकता है।
- युवाओं को लोक परंपरा से जोड़ने के लिए स्कूलों में स्थानीय विषय जोड़े जाएं।
- ग्राम स्तर पर सांस्कृतिक मेले, नाट्य मंचन और गीत प्रतियोगिताएं हों।
- सरकार और स्वयंसेवी संगठनों को संस्कृति संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष

बावरी समाज की संस्कृति व लोक परंपरा आज संक्रमण काल से गुजर रही है। जहां एक ओर सामाजिक सुधार और जागरूकता ने इनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के लुप्त होने का खतरा भी मंडरा रहा है। आवश्यकता है संतुलन की जहाँ आधुनिक जीवनशैली को अपनाते हुए भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया जाए। बावरी समाज की लोक परंपराएं उनकी सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी हुई हैं। ये परंपराएं केवल धार्मिक या सामाजिक रीति–रिवाज नहीं हैं, बल्कि उनके जीवन का तरीका, उनका ज्ञान और उनका दर्शन भी हैं। आज आधुनिकता के प्रभाव में ये परंपराएं संकट में हैं, अतः इनका दस्तावेजीकरण और संरक्षण अति आवश्यक है। बावरी समाज की संस्कृति एक जीवंत परंपरा है जो प्रकृति, लोक आस्था, और पारंपरिक ज्ञान से गहराई से जुड़ी हुई है। बदलते समय के साथ इनके जीवन में आधुनिकता का प्रभाव जरूर पड़ा है, परंतु उनकी सांस्कृतिक पहचान अब भी सजीव है। आवश्यकता है कि इस समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया जाए और उन्हें सामाजिक रूप से सशक्त किया जाए। बावरी समाज की संस्कृति और लोक परंपरा भारत की विविधता में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि आज यह समाज अनेक सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है, फिर भी इसकी सांस्कृतिक पहचान जीवंत और प्रेरणादायक है। आवश्यकता है कि इस समाज के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित किया जाए और उन्हें शिक्षा, रोजगार व स्वास्थ्य के अवसर प्रदान कर मुख्यधारा में जोड़ा जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- कर्दभ, डॉ. जयप्रकाश, ईक्कीसवी शदी में दलित आन्दोलन, पंकज पुस्तक मन्दिर दिल्ली, पृ–. 200 भुमिका से
- **कुमारी मोनिका (2019)** "राही मासुम रजा के आधा गांव उपन्यास मे दलित विमर्श" शोध श्री, अंक –1,आई.एस.एस.एन. 0974–7958, 2019 पृ.स. 30–32.
- **जेना कुमार विक्रम व प्रसाद देवी (2021)** "लांजिया सौरा जनजाति में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनः एक सारगर्भित विश्लेषण" मेकल मीमांसा, वर्ष–13, अंक–02,आई.एस.एस.एन. 0974–0118, 2021, पृ.स. 58–67.
- **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 160–190.
- **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 405–416.
- जैन हुकम चन्द एव माली नारायण लाल, राजस्थान का इतिहास,सस्कृति,परम्परा एव विरासत,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,आई.एस.बी.एन. 978–81–948052–3–6,पृ.360.
- **जैतली अजय कुमार एव कुशवाहा पूजा 2013** भारत मै जनजाति समाज एव उनकी कलाए अपनी माटी सस्थान चितौडगढ,आई एस एस एन 2322–0724, पृष्ट संख्या 1–2
- **डॉ. सैन कुमार राजेन्द्र (2019)** "बागड़ी समाज के रीति–रिवाज व विभिन्न रस्में" शोध श्री, अंक –1,आई.एस.एस.एन. 0974–7958, 2019 पृ.स. 33–45.